प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी द्वारा स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष में लाल किला, दिल्ली में दिनांक 15.8.86 को दिया गया भाषण ।

बहनों और भाईयों... भारतवासियों, आज अब बालीसवीं बार लाल किले पर जमा हुए हैं । यह लाल किला भारत के एक गौरव की निशानी है । भारत के शक्ति की निशानी है । आज़ादी की पहली पुकार यहीं से 1857 में उठी थी । यहीं पर सुभाष चन्द्र बोस के साथी शाहनिवाज, ढिल्लों और सहगल को मुकद्दमें में खड़ा किया गया था । उनकी कुरबानी, देश-भक्ति की कुरबानी से कोई कुरबानी नहीं हो सकती है । यहीं पर अंग्रेजी-झण्डा नीचे उतरा था । और यहीं पर पंडित जी ने इस तिरंगे झण्डे को पहली बार ऊपर चढ़ाया था । यह झण्डा जिसे हम सम्मान करते हैं, आदर देते हैं हमारा प्यारा झण्डा! हमारे दिल के पास का झण्डा । इसी झण्डे के नीचे हम देश की रक्षा के प्रतीक हैं । इसी झण्डे के नीचे हम देश के विकास के प्रतीक हैं । हम..हम सब भारतमाता के बच्चे हैं । हम भारत को शान्ति का धाम बनायेंगें । हम भारत को खुशहाल बनायेंगें । जब हम गणतंत्र को मनाते हैं तो गणतंत्र-हम क्या समझते हैं ? क्या जो आजादी मिली थी उसके मायने क्या समझते हैं ? आजादी के मायने कि खाली लोगों को आजादी मिली या उसके साथ हम धरती का भी सोचते हैं, पेड़ों का भी सोचते हैं, आसमान का भी सोचते हैं । क्या हम विकास का सोचते हैं, तरक्की का सोचते हैं । हमें यह सब तो आजादी में आता है । लेकिन और इससे ज्यादा भी इससे कुछ बहुत ज्यादा गहरी बातें कुछ बुनियादी बातें हमें हमारे पुराने प्राचीन सांस्कृति नहीं भूलनी है । हमारे मूल्य हमारे सिद्धान्त टूटने नहीं है । हमें देखना है कि हमारे परम्परा, हमारी विरासत को हम बनाये रखें । लेकिन यह मूल्य क्या हैं ? पहले तो शायद राष्ट्र का है । राष्ट्रीयता कि भारत के लिए कोई नयी बात नहीं है । एक बहुत पुराना विचार है । एक ऐसा गहरा विचार है जो भारत की जनता के दिल में मन में हजारों साल से पड़ा हुआ है और कोई भी उसे हटा नहीं पाया है । चाहे भारत में एक राजनीतिक एकता हो, चाहे हम किसी के नीचे दबे हुए थे लेकिन यह राष्ट्रीयता आ पाया है । आज हम इसे गणतंत्र भारत के रूप में देखते हैं । एक राष्ट्र गौरवशाली, आत्म-निर्भर एक उद्देश्य से जुड़ा हुआ है । अपनी एकता, अखण्डता की रक्षा पर समर्पित । अगर भारत मजबूत होगा तो भारत का हरेक भारतवासी

मजबूत हो । अगर भारत कमज़ोर होगा तो भारतवासी भी कमज़ोर होगा । हमारी कोशिश है कि हम भारतवासियों को मजबूत बनाएं । हमारी कोशिश है कि भारतवासियों को मजबूत करके हम भारत का एक भविष्य बनायें । भारतवासियों को मजबूत करके हमारा गौरव बनता है । भारतवासियों को मजबूत करके हमारी उन्नति होती है । भारतवासी होने के मायने खाली यह नहीं है कि हम आज के भारत के नागरिक हैं । भारतवासी होने के मायने हैं कि हमारे पांच हजार साल की सभ्यता को आत्मसात करना है । इस सभ्यता की विभिन्नता-अनेक तरह-तरह के धर्म हैं भारत के..हिन्दु, मुसलमान, सिख, ईसाई, जैन, पारसी, बौद्ध।तरह-तरह की भाषाएं हैं, ये ही हमारी सहनशक्ति हैं । लेकिन हमारी एकता बनती है, हमारी ताक़त बनती है जब हम "सर्वधर्म समभाव"के रास्ते पर चलते हैं । भारत के लिए यह एक ही रास्ता है और ये ही अनेक-अनेक तरह की विभिन्नता भारत की शक्ति भी है । आज़ादी मिलने पर हमें भारतसरकार चलाने का मौका मिला । बहुत देशों को आज़ादी मिली । लेकिन बहुत कम देश ऐसे निकले जिन्होंने यह आज़ादी सचमुच में जनता की आज़ादी बनाई । भारत एक ऐसा देश है । भारत में भारत के हर व्यक्ति को आज़ादी है । भारत में अपनी जनता को हर तरह का मानव अधिकार दिया । जब हम भारत की तरफ देखते हैं तो हमें दूसरे देशों की तरफ भी देखना चाहिये । देखना चाहिये कि दूसरे कितने देश हैं जो भारत के रास्ते पर चल पायें । जो भारत जैसी जनता को आजादी दे पाये हैं, जनता के हक दे पायें हैं और जो लोकतंत्र है,रख पाये हैं । भारत में सरकार की शक्ति भी जनता के हाथ में रखी है। जब जनता चाहे सरकार को बदल सकती है । जब जनता चाहे भारत सरकार का रास्ता बदल सकती है । भारत में लोकतंत्र में वे पूरी आज़ादी से चुनाव कराये । भारत ने एक फ्री-प्रेस दिया है, भारत ने एक ऐसा कानून दिया है जो सब को बदल सकता है, जो सब पर बराबर लागू होता है । लेकिन अगर आज़ादी के साथ लोकतंत्र मिला, लोकतंत्र के खाली यह मायने नहीं कि हम सिर्फ आर्थिक विकास की तरफ चलें । लोकतंत्र आत्मनिर्भरता जरूरी है लेकिन इसके साथ हमारी विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता उतनी ही जरूरी है। जब हम इन तीनों बातों को एक साथ मिला दें तब हमारे विकास का असली रास्ता बनता है । आज अगर हम भारत को देखते हैं..जब हम याद करते हैं

कि अंग्रेजों के समय पर भारतवासियों की क्या दशा थी, भारत की जनता की क्या दशा थी । और आज जब हम भारत की जनता को देखते हैं तब हमें दिखाई देता है कि भारत में कितनी तरक्की हुई है । अगर हम याद करें तो अंग्रेजों के जमाने में अकाल से-भूख से ज्यादा लोग मरते थे। आजादी के कुछ साल ही पहले बंगाल के अकाल में बीस लाख लोग मरे थे । पच्चास साल में 1900 से लेकर 1950 तक हमारे खेतों का उत्पादन, पैदावार एक ही जगह खड़ी रही । हमारे किसान अपनी पैदावार बढ़ा नहीं पाये । लेकिन, सन पच्चास से ले के पच्चासी तक हमारे किसानों की पैदावार तीन गुणा बढ़ गयी । गेहूं की पैदावार सात गुणा, और चावल-धान की पैदावार पांच गुणा बढ़ी है । मैं आज गणतंत्र दिवस पर भारत के किसानों को मुबारक देना चाहता हूं क्योंकि उनकी शक्ति पर हम आज आजाद खड़े हैं । इसी तरह से अगर हम सेहत को देखें तो आजादी के पहले बहुत बच्चे छोटे-छोटे बच्चे मर जाते थे लेकिन हमने बहुत तगड़ा कार्यक्रम चलाया । हजारों लाखों की एक पी० एच०सीज लगी । हमें मलेरिया और स्मालपॉक्स खत्म कर दिया । हमारे कार्यक्रमों से भारत की जीवन-आयु करीब दुगुनी हो गयी । आज 56 साल से ऊंची हो गयी है । मैं हमारे सब डाक्टरों को हमारे सब लड़कों को जिन्हें जितने लोग इस कार्यक्रम में लगे थे उन्हें आज मुबारक देता हूं । इसी तरह से अगर हम शिक्षा को देखें तो आजादी के पहले बहुत कम स्कूल थे । आज गांव-गांव में स्कूल पहुंचे हैं । इसके यह मायने नहीं कि हम शिक्षा नीति से खुश थे । हमें इसे बदला है और हमारी उम्मीद है कि जो शिक्षा नीति ने आज तक हमारा सहारा दिया उनका समय पूरा हो गया था । एक नया रास्ता बनाना है और जो शिक्षा नीति हमने बनाई है उससे भारत को यह रास्ता मिलेगा। एक नया रास्ता मजबूती का, एकता का, आत्मनिर्भरता का । इसी तरह से गांव गांव तक सड़कें पहुंची हैं । देहात में आदिवासी इलाकों में पीने का पानी बहुत जगह पहुंचा है और हमारी उम्मीद है कि सातवीं योजना में भारत में कोई गांव न बचे जिसमें पीने का पानी नहीं पहुंच गया हो । उपोगीकरण से करोड़ों लोगों को रोजगारी मिली है । हमने देखा है कि एक पिछड़े हुए देश से भारत ऊपर उठा है, आगे बढ़ा है । हमारे उपोगों ने खाली रोजगारी और नौकरी नहीं दी बल्कि उनके उत्पादन से भारतवासियों का जीवन कुछ अच्छा हुआ है ।

भारतवासी आगे बढ़ पाये हैं । उनके उत्पादन से भारत आगे बढ़ा है । भारत में तरक्की पहुंची है । अगर हम देखें कि सायंस और टैक्नोलोजी ने भारत को यह क्या किया है, बहुत तरक्की हुई है । हमारे वैज्ञानिकों ने टैक्नोलोजिस्ट ने भारत को एक पिछड़े देश से लेकर दुनियां के आगे बढ़े हुए देशों के साथ खड़ा कर दिया है और उन्होंने खाली अपने विज्ञान का नहीं सोचा उन्होंने सबसे पहले भारत की आम जनता का सोचा । भारत के गरीबों का सोचा, भारत के पिछड़े वर्गों का सोचा और जो हम..जब हम साईंस टैक्नोलोजी की बात करते हैं तो हम बात करते हैं उस साईंस टैक्नोलोजी को लेकर भारत के देहात में भारत के गरीब वर्गों तक पहुंचाने के लिए । आज जब हम भविष्य की तरफ देखते हैं जब हम देखते हैं कि इक्कीसवीं शताब्दी में भारत कैसा देश होगा तो हमें एक मजबूत देश दिखाई देता है । एक देश जिसमें जो अपने पर विश्वासपात्र हो, एक देश जो आर्थिक रूप से शक्तिशाली बन गया । यह कैसे हो सकता है । सबसे पहले तो आत्मनिर्भरता से ही हो सकता है । और कोई रास्ता नहीं है । हमें देखना है कि देश की इज्जत बनी रहे । हमारा झण्डा ऊंचा रहे । हम सिर उठाकर दुनियां में चल सकें । हमें देखना है कि हमारी आज़ादी बची रहे । यह खाली तब होगा जब हम आत्मनिर्भर होंगे ।हम अपने पैरों पर खड़े होंगे । हम इसी रास्ते पर चलते हुए आये हैं और इसी रास्ते पर आगे भी भारत को चलायेंगे । हमने देखा है कि भारत कर्ज़े में न डूब जाये । दूसरे देश सफलता के रास्ते पर बहुत कर्ज़ा ले चुके हैं और उसी में डूब रहे हैं ।हमने देखा है कि भारत मल्टीनैशनल के दबाव में न आये । अगर भारत को आगे बढ़ना है, मजबूत होना है तो यह रास्ता हम बदल नहीं सकते हैं । लेकिन, अगर हमारे ध्यान पर एक चीज रही है इस विकास के रास्ते पर चलते हुए अगर एक सबसे ऊंची सबसे प्राथमिक बात हमारे मन में रही है कि तो वो भारत के गरीब हैं, भारत के दबे हुए कमज़ोर तबके हैं । और हमारी पूरी ताकत लगी है इस गरीबी को दूर करने में । हमारे कार्यक्रमों से गरीबी हटाने के कार्यक्रम बीस सूत्री कार्यक्रम और कृषि के कार्यक्रमों से..क्योंकि जितनी गरीबी कृषि के कार्यक्रमों से हटती है उतनी शायद गरीबी हटाने के कार्यक्रमों से नहीं हो सकती । क्योंकि कृषि की पहुंच बहुत ज्यादा है, ताकत बहुत ज्यादा हैं । ~~हम~~

इन दो कार्यक्रमों से पिछले पांच साल में दस करोड़ लोगों को हमने गरीबी रेखा से ऊपर उठाया है । हमारी उम्मीद है कि सातवीं योजना में हम भारत के तीन चौथाई जनता को गरीबी से ऊपर उठा देंगे । हमारी कोशिश है कि भारत में आते हुए सालों में गरीबी किसी भी तरह से बचे नहीं ।आते हुए दिनों में मैं आपके सामने बीस सूत्री कार्यक्रम को दोबारा देखने वाला हूं । इसे हमने थोड़ा बदला है, थोड़ा मजबूत किया है और जो काम पूरे हो गये थे, जो कार्यक्रम पूरे हो गए थे उन्हें हम बदल कर आपके सामने लायेंगे । बीस सूत्री कार्यक्रम में हम देख रहे हैं कि ज्यादा रोजगारी भी लोगों को मिले । पिछले साल मैंने भारत के कोने कोने में दौरा किया । जब भी मैंने दौरा किया है मैंने सब से पहले गरीब इलाकों का दौरा किया है । जो भारत के सब से दबे हुए इलाके थे-आदिवासी इलाके थे, वहां मैं पहले गया । मैंने गरीब से गरीब से बात करी है । गांव वालों से बात करी । मैं उनसे मिला । किसानों से मिला, उनके घर में, उनकी झोपड़ी में मिला, उनके खेतों में मिला । जहां राहतगार का काम हो रहा था वहां उनसे बात करी । उनके दुख देखे । उनकी कठिनाईयां देखी । साथ में उनकी सफलता देखी । उनकी आशायें देखीं । उनकी सहनशीलता देखी, उनकी एक अन्दरूनी शक्ति देखी, उनकी वीरता देखी । उनका काम उनका संघर्ष देखा । मैंने देखा किस तरह से वो इन कठिनाईयों का मुकाबला कर रहे हैं । कैसे वो वेस्टेड इन्ट्रस्ट का मुकाबला कर रहे ह थे । कैसे दबे हुए तबके, जमींदारों का मुकाबला कर रहे थे, कैसे अधिकारी-तंत्र का मुकाबला कर रहे थे । मैं भारत के गरीबों के साथ में सब से कमजोर वर्गों के साथ, मैं भारत के सबसे पिछड़े हुए लोगों के साथ-आज हम वचनबद्ध हैं । आज कमजोर भारत के कमजोर पिछड़े वर्गों में गरीब हैं, साथ में हरिजन हैं आदिवासी हैं और शायद सबसे बड़ा वर्ग महिलाओं का है । हमें देखना है कि विवेक के भेद हट जायें और हम इसे हटायेंगे । मैं देखूंगा किस तरह से हम नीतियों को बदल सकते हैं, किस तरह से कार्यक्रमों को बदल सकते हैं । कैसे कानूनों को हम और मजबूत कर सकते हैं ।हरिजनों के लिए, आदिवासियों के लिए, महिलाओं के लिए । हमारी कोशिश होगी कि महिलाओं को इज्जत मिले, समता मिले और उन्हें आर्थिक

आजादी मिले । साथ में हमें देखना है कि हम हमारा पुराना हमारी प्राचीन तत्वज्ञान न भूल जायें । खाली आर्थिक दौर से विकास नहीं होता है । हमारे प्राचीन ज्ञान ने हमें सिखाया है. कि पैसे से-धन से विकास नहीं होता है । पैसे और धन से स्वार्थी और लालची शक्तियां बढ़ती हैं । असंतुष्टता बढ़ती है । और अंत में लोग ज्यादा दुखी होते हैं । आज जरूरत है नैतिक मूल्यों के लिए..हमें देखना है कि हमारे पुराने मूल्य हमारी प्राचीन संस्कृति जिससे हमारी ताकत बनी रही है जिससे हम एक रहे हैं वो बची रहे । वो बनी रहे । पिछले सालों में आज़ादी के बाद बहुत तरक्की हुई है । कहीं से भी देखें किसी भी तरफ देखें तो यह तरक्की दिखलाई देती है । लेकिन हमें भविष्य की तरफ देखना है और हमें देखना है कि हमारा भविष्य और भी उज्जवल हो । एक काटा इस भविष्य में दिखलाई देता है. साम्प्रदायिकता का । यह शर्म की बात है. समाज विरोधी बात है कि हम साम्प्रदायिकता से घृणा करते हैं. निर्दोष लोगों को मारते हैं. दुकानें लूटते हैं. घर जलाते हैं । हम इसे होने नहीं देंगे । हम इसे होने नहीं दे सकते हैं । हर तरह की हिंसा खराब होती है लेकिन धर्म के नाम पर जो हिंसा होती है उससे कोई हिंसा और खराब नहीं हो सकती है एक तरह से कि धर्म को धोखा देना है । असली धर्म सहनशीलता का होता है । असली धर्म प्यार का होता है. हर भगवान को आदर देने का होता है । जो रास्ते-अलग धर्म के रास्ते भगवान की तरफ जाते हैं हमें मानना है कि सब रास्ते भगवान के ही तरफ पहुंचते हैं और कोई गलत रास्ता नहीं है । सब ठीक रास्ते हैं । एक और सांप हमारे बीच में उठ रहा है कट्टरपन का । कट्टरपन से घृणा बनती है. हिंसा बनती है । हम देखेंगे सरकार की तरफ सख्ती की जरूरत होगी तो सख्ती इस्तेमाल करेंगे । सरकार की पूरी शक्ति लगाने की जरूरत होगी तो हम सरकार की पूरी शक्ति लगायेंगे । हम कट्टरपन को बढ़ने नहीं देंगे । हम साम्प्रदायिकता को हिंसा को बढ़ने नहीं देंगे. खतम करेंगे । पिछले साल जब मैं आपसे बात कर रहा था तो हमने पंजाब में एक एकोर्ड करा था । इस एकोर्ड से बातचीत हुई बहुत आगे बढ़े हैं । इस एकोर्ड से एक लोकतंत्र एक जनता की सरकार पंजाब में वापिस आई । लोकतंत्र दोबारा पंजाब में बना । इस एकोर्ड के साथ हम उग्रवाद का मुकाबला कर पाये हैं । आतंकवाद का मुकाबला कर पायें हैं । साथ में हमने देखा है कि पुलिस की ट्रेनिंग बढ़े. उन्हें बढ़िया से बढ़िया एकविपमेंट दिया जाये और जो उन्हें मजबूती देने की जरूरत है. जो सहारा देने की ..7

जरूरत है वो हमने पूरी तरह से दिया है । आज हम देख रहे हैं कि उग्रवादी हट रहे हैं, पकड़े जा रहे हैं, मारे जा रहे हैं, गिरफ्तार हुये जा रहे हैं । पिछले हफ्तों का हम देखें तो बहुत उग्रवादी पकड़े गए हैं । यह कार्यवाही जारी रहेगी । यह कार्यवाही और तेजी से करी जायेगी और हम जानते हैं कि कुछ ही महीनों में हम उग्रवाद का मुकाबला कर सकते हैं पूरी तरह से और उग्रवाद को खतम कर सकते हैं । यह जल्दी होगा।ज्यादा समय हम इसे नहीं चलने दे सकते हैं । लेकिन जैसे ही यह लड़ाई हम जीतते हैं, जैसे ही हम सफलता पाते हैं वैसे ही उग्रवादियों में एक भगदाशा पैदा होती है । जब वो यह देखते हैं तो वो एकदम से कुछ ऐसी चीजें करने की कोशिश करते हैं जिससे उसका हौसला बढ़े । पिछले साल हमने देखा था संत लोगोंवाल की हत्या हुई । इस साल हमने देखा कि उन्होंने जनरल वैपा की हत्या कर दी । हमें दोनों समय पर बहुत दुख हुआ । लेकिन उग्रवादियों में ने यह दोनों कदम तब उठाये जब उन्हों ने देखा कि उनका दूसरा काम नहीं चल रहा था उन्होंने देखा कि वो खतम हो रहे थे दब रहे थे,जनता उनके खिलाफ जा रही थी । वो पकड़े जा रहे थे, गिरफ्तार हो रहे थे, मारे जा रहे थे । आज वो तो शायद दोबारा है । दोबारा वो मारे जा रहे हैं, पकड़े जा रहे हैं,गिरफ्तार हो रहे हैं और जितना हम उनपर दबाव लगायेंगें उतना वो कोशिश करेंगें कि ऐसे ही एक और बार दो बार अपना हाथ उठायें । भारत की जनता का हौसला उड़ाने के लिए । भारत की जनता को जल्दी में हाथ चलाने, यह करने के लिए । लेकिन, हम देखेंगें कि हम प्रोवोक नहीं होंगें । हम देखेंकि कि किसी इनोसेंट व्यक्ति पर कोई हाथ न उठाये । हम अपने दिमाग को छोड़कर उग्रवादियों का खेल नहीं खेलेंगें । यह भारत की जनता को तय करना है । और भारत की जनता यह तय करेगी । कि चाहे उग्रवादी कुछ भी करें हम उनके खेल में ना आयें । हम अपनी चाल चलें और अपनी चाल से उन्हें खतम करें । हम देखेंगें कि हर शक्ति लगेगी उग्रवाद को, उग्रवादियों को खतम करने में । शक्ति से एक निष्ठा से पुलिस के एक्शन से और राजनीति से जरूरत होगी राष्ट्र में एक नैतिक शक्ति बनाने की । जरूरत होगी कई अजीब विचारों को हमारे मन से निकालने के लिए । एक अजीब विचार है..कि धर्म के नाम से हम कत्ल करते हैं, धर्म के नाम से हम लूटते हैं, अजीब विचार है जो हम हमारे संतों और गुरुओं के नाम पर हिंसा और उग्रवाद कर सकते हैं । उग्रवाद का मुकाबला करने के लिए सरकार की पूरी शक्ति की जरूरत है । लेकिन उसके साथ भारत की पूरी जनता को

सोच समझ कर खड़े होने की जरूरत भी है । अगर हम उग्रवाद का मुकाबला करेंगे तो पच्चहत्तर करोड़ एक होकर खड़े होकर कर सकते हैं । एक तरह से सोचकर एक ध्यान से हमारा हर जो पुरानी विचारधाराएं हैं हम अहिंसाकी उनसे हम आगे बढ़ सकते हैं । गांधी जी ने कहा था कि अहिंसा का धर्म खाली ऋषि मुनी और संतो के लिए नहीं है । अहिंसा का धर्म आम जनता के लिए है । अहिंसा के धर्म पर आम जनता की शक्ति बनती है । गांधी जी ने हमें दिखलाया था कि अहिंसा और असहनशीलता से हमारी कमजोरी बाहर आती है । उन्होंने हमें दिखलाया था कि हम घृणा को या दुष्टता का जवाब दुष्टता से नहीं दे सकते हैं । उन्होंने शान्ति और अहिंसा का रास्ता हमें दिखाया था । इसी रास्ते पर हम उग्रवाद का मुकाबला कर सकते हैं । इसी रास्ते से हम उग्रवाद को जवाब दे सकते हैं । इसी रास्ते से उग्रवाद पर हमारी जीत होगी । हमें देखना है कि हम असाम्प्रदायिकता पर और सहनशीलता के रास्ते पर चलें ।हमें देखना है कि हमारी राष्ट्रीयता और हमारे.हमारी आज़ादी की लड़ाई में जिस तरह से हर धर्म हर जात हर भाषा के लोग एक होकर खड़े हुए थे आबादी उसी तरह से इस लड़ाई में भी एक होकर खड़े हुए अगर भारत को आगे बढ़ना है तो हम खाली अन्दर देख के आगे नहीं बढ़ सकते हैं । हमारी दृष्टि हमारी सीमा पार दुनियां की तरफ भी जानी है । आज हम देख रहे हैं दुनियां में एक बहुत बड़ा खतरा है । एक ऐसा खतरा है जो दुनियां की सुरक्षा को खतम करने की कोशिश कर रहा है । एक ऐसा खतरा है जो हमारे विकास के रास्ते को रोकने की कोशिश कर रहा है । अगर भारत को मजबूत होना है, अगर दुनियां के हमारे हिस्से में क्षेत्रीय सुरक्षा होनी है तो हमें एक ही रास्ता चुनना है । आज की लड़ाई ऐसी है जो किसी देश की सीमा पे नहीं रुकेगी । जो किसी चुने देशों के फौज पर नहीं रुकी रहेगी । ऐसी लड़ाई है जो सीमा-पार आ जाती है । ऐसी लड़ाई है जो पूरी दुनियां को नष्ट कर सकती है मानवता को नष्ट कर सकती है । हमारी कोशिश है कि हम ऐसी लड़ाई न होने दें । हमारी कोशिश है कि परमाणु हथियार की यह जो दौड़ है एक पागलपन है उसे हम खतम कर दें । हम जानते हैं कि एक ही रास्ता है डिसआरमामेंट का रास्ता है । खाली जब परमाणु हथियार खतम होंगे तब भारत के किसानों की सुरक्षा पूरी होगी, भारत की जनता की सुरक्षा पूरी होगी । डिसआरमामेंट पर भारत की आवाज़ बहुत साफ है, बहुत ऊंची है । शान्ति के लिए दुनियां के भविष्य के लिए मानवता के भविष्य के लिए हमारी

विदेश नीति से हमें शक्ति मिली है । हम आजाद रहे हैं और दुनियां में भी एक शान्ति आई है । अगर हमें विकास के तरक्की के रास्ते पर चलना है तो हमें दुनियां में शान्तिकी जरूरत है । दुनियां की राजनीति में भारत की आवाज बहुत ऊंची होती है । सुनी जाती है । जब भारत की आवाज भारत बोलता है तो भारत के पचहत्तर करोड़ लोग इस आवाज से बोलते हैं । यही हमारी शक्ति है । हमारा आज आदर है क्योंकि हम गुटनिरपेक्षता के रास्ते पर चले हैं, आत्मनिर्भरता के रास्ते पर चले हैं, अपने पैरों पर खड़े हुए हैं, हम हिम्मत के साथ बोलते हैं, आजादी से बोलते हैं, बगैर अवरोध के बोलते हैं । गुटनिरपेक्षता एक तरह से अन्तर्राष्ट्रीय लोकतंत्र जिससे हमारी आजादी पर कोई खतरा नहीं पड़ता है । पंडित जी ने दुनियां को यह सुझाव दिया था। इन्दिरा जी ने इस नीति को आगे बढ़ाया । मामूली तरह से शुरू हुई थी । आज 101 देश इसमें लगे हुए हैं । दुनियां के दो तिहाई देश गुटनिरपेक्ष आवाज से बोलते हैं । पिछले सालों में भारत गुटनिरपेक्ष देशों का अध्यक्ष था । कई समस्याएं हमारे सामने आईं । ग्रेनाडा की समस्या आई, लीबिया की समस्या आई, अफगानिस्तान की समस्या आई और जिस तरह से बड़े देश अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों को छोड़कर अपने रास्ते पर चल रहे हैं उसकी समस्या आई । दुनियां बहुत मुश्किल समय से निकली है लेकिन भारत की अध्यक्षता के नीचे गुटनिरपेक्षता आन्दोलन भी मजबूत हुआ है । दुनियां में शान्ति हो पाई है । आज गणतंत्र दिवस पर मैं सब भारतवासियों को शुभकामनाएं भेजता हूं लेकिन खास तौर से हमारे फौजियों को मैं शुभकामनाएं देता हूं । जो फौजी हमारी सीमा पर बैठे हैं चाहे रेगिस्तान में हों, चाहे ऊंचे पहाड़ों पर हों चाहे घने जंगलों में हों, सब को शुभ कामना देता हूं क्योंकि उनकी कुरबानी से भारत अपनी आजादी कई बार बचा पाया है । यहां खड़े होकर जब मैं सामने देखता हूं तो मुझे मंदिर दिखलाई देते हैं, मस्जिद दिखाई है, गुरुद्वारे दिखाई देते हैं, गिरजे दिखाई देते हैं, ये ही भारत का धन हैं, ये ही भारत की शक्तियां हैं । यहां खड़े होकर मेरा ध्यान गांधी जी पर, पंडित जी पर जाता है । मौलाना आजाद पर, सरदार पटेल, राजेन्द्र बाबू पर, राजा जी, सुभाष चन्द्र बोस, शास्त्री जी और इन्दिरा जी पर जाता है । सोलह बार इन्दिरा जी इसी लाल किले पर खड़ी हुईं । इन्दिरा जी ने अपने पूरे जीवन भारत के गरीबों के लिए, भारत के कमजोर वर्गों के लिए लड़ाई लड़ी । भारत की एकता और अखण्डता के लिए लड़ाई लड़ी । और उन्होंने वो भारत की एकता अखण्डता के लिए बलिदान दिया ।

उनके काम की जिम्मेवारी आज हमारे कंधों पर पड़ती है । उनका वायदा हम हर तरह से पूरा करेंगे । आज हम राष्ट्र के प्रति अपने आप को समर्पित करें । आजादी रखने के लिए, लोकतंत्र को बचा के रखने के लिए असाम्प्रदायिकता को बनाने के लिए समाजवाद को हर तरह से लाने के लिए भारत की एकता के लिए, अखण्डता के लिए , भारत की गौरवता के लिए ।

मेरे साथ तीन बार जोर से बोलिए..जय हिन्द..जय हिन्द..जय हिन्द ।

धन्यवाद ।